अवतरण दिवस

23 नवम्बर, 2009 सोमवार

सदगुरु भगवान की अमृतवाणी

divinepramilabhagwan.com

अवतरण दिवस

23 नवम्बर, 2009 सोमवार

सदगुरु भगवान की अमृतवाणी

आज का दिन शुकराना गाने का दिन है, आप सब यहाँ आए हैं पर ये जीवन किसने बनाया, वो याद आता है? जन्म तो मिला पर जीना सिखाया सद्गुरु ने, सारी महानता उन्हीं की है। सुबह से मन में शुकराने ही शुकराने आ रहे थे। कैसे गुरु ने यह अखण्ड ज्योत जलाई, जिससे सब प्रकाशित होता जा रहा है। केवल आज ही उत्सव नही है हर रोज ही उत्सव हो गया है। उनका इघर आना, फिर कैसे गलियों कूचों से सबको निकालना ये उन्हीं का काम है। सबसे बड़ा उनका पुरुषार्थ था, उनकी मेहरबानियों से ही सत्संगजनित सुख पहुँच रहा है, कई हाथों से यह कार्य हो रहा है, ज्योत से ज्योत जल रही है, रोज़ ही दीवाली दिखाई देती है। वो इस कार्य में तत्पर लगा पड़ा है और हजार हाथों से देता हुआ दिखाई देता है। उसने अपनी मैं को मिटाया और सबके अन्दर तत्व रूप से प्रगट हो गया। विवेकानन्द ने भी कहा था - 'ये कार्य स्त्रियों द्वारा होगा'। उस समय बहुत गरीबी थी, अग्रेजों का शासन था, ये सोचा - 'मानव जाति का दुख कौन दूर करेगा, इन्हें कौन हंसाएगा, इनके होठों पर कौन हंसी लाएगा, इसके लिए स्त्रियां ही समर्थ हैं। 'दादा भगवान के अन्दर भी बहुत करुणा का भाव था, एक दर्द था कि कैसे इनके आँसूं सूख जाएं, ये हसें। कबीर ने तो बोला-'घर-घर लागी आग', पर इसे बुझाने के लिए किसी की प्रेरणा चाहिए, किसी का सर पर हाथ चाहिए, ये शक्तिदायी विचार वही दे सकता है जो स्वयं शक्ति से भरपूर होगा। दादा भगवान् गीता भगवान को देखकर बड़े खुश होते थे कि ये मेरा कार्य आगे बढ़ाएगी, उन्हीं की अथक मेहनत का फल है जो इतना ज्ञान सब तरफ फैला, इतनी फुलवारी बनी।

वे सभी को बोलते थे - उठो, जागो, कार्य करो। उन्होंने ऐसा बीड़ा उठाया, हाथ से मेहनत करके पत्र लिखना, घर से निकलना, पैदल, जाना, चौतरफा बंधन भी थे, फिर भी उन्हें काटकर सबके पास जाना, ससुराल के बंधन भी बहुत कड़े थे पर कृष्ण वाली युक्तियाँ अपनाकर निकल आते थे। कभी कभी दोपहर को कुन्डी खटखटाकर भी हमारे पास पहुँच जाते थे कि उठो - अभी सो रहे हो। उनका जीवन उनका चरित्र इतना उज्जवल था कि उनको देखकर भी सब शुद्ध हो जाते थे। जो जितना शुद्ध होगा, वही दूसरे को बना भी सकता है। जिसके जीवन में ये ज्ञान उतर जाता है वही अवतार हो जाता है। वे मन की शांति, धैर्य, सहनशीलता सब देखते थे जिसके लिए दुनिया असम्भव- असम्भव कहती है। गृहस्थ जीवन में रहकर कैसे कंवल के फूल की तरह न्यारे होकर रह सकते हैं। ये जीवन कहीं पशुवत ऐसे ही ना चला जाए। दुनिया में

हरेक को समाज का भय होता है, लोग क्या कहेंगे, गुरु उस डर को निकालता है। What the people say let them say. इन शब्दों की परवाह मत करो, वो तो उड़ जाने वाले हैं।

तुमने भी सिर्फ खाया, पीया, भोगा, सोया तो पशुवत जीवन हो गया, तुम साधारण लड़की बनकर दुनिया में मत जियो, हरेक में ये शक्ति विद्यमान है। सब ये कार्य कर सकते हैं बस छिपी हुई शक्ति को उजागर करना है। '**ज्ञान अंजन गुरु दिया अज्ञान अंधेर विनाश**'। ये ज्योत तो बुझ जाएगी पर वो ज्योत तो युगों से जाग्रत है पर Cover हटाना है। ये विश्वास रखो, Self Confidence बहुत जरूरी है।

दुनिया ने जो कहा- हमने वही माना। I am Mr. So & So. रिश्ते निभाने हैं, ये ज़रूरी है पर उन्होंने कहा- ज़रूरी काम क्या है।

'जिस वखर को लैण तू आया, राम नाम संतै दर पाया।'

तुम Train पकड़ने के लिए प्लेटफार्म जाते हो, पता चले कि डिब्बा Last वाला है, तो क्या करोगे? क्या सोचते रहोगे कि डिब्बा पीछे है, क्या करूं, भीड़ बहुत है पर ये सब ना सोचकर केवल दौड़ लगाते हो, कोई मिलता भी है तो भी बात नही करते और दोड़कर डंडा पकड़ ही लेते हो, तुम तो यहाँ कहते हो जब भीड़ हटेगी, काम पूरे होंगे। Retirement लेंगे तब पहुचेंगे, पर यहां 15 साल की लड़की Retire है। दुनिया में सब माया को ही एकत्रित करते रहते हैं, वो चीजें इकट्ठी करते हैं जो यहीं छूट जाएंगी।

'दिल तो दिलबर की जगह है बात ये कोई क्यों भूलता है जो न बसाए दिलबर को, वो जीवन खोता है।'

तुम अभी भी क्यों नही समझते हो? इच्छाएँ पूरी करने से इच्छाएँ पूरी नहीं होती, घी आग में डालने से आग और भड़कती है। ब्रह्मचर्य की बहुत ताकत है। दुनिया में सब कहते हैं ये तो Natural है पर गुरु बताता है तुम छोड़ने में समर्थ हो, पति को पत्नी सहयोग ना दे तो कहेगा क्या यही relation है? तो क्या बहन से, माँ से relation नहीं है? उनसे प्यार का नाता है तो पत्नी से भी प्यार का नाता रखो। तू मनुष्य है, माना मन का ईश्वर है, गुलाम नहीं है। मन तेरे इशारे पर चले ना की तू मन के इशारे पर चले।

यहां लोभ के लिए नहीं आते पर लाभ के लिए, क्रोध लिए नहीं पर प्रेम के लिए, शांति के लिए। भगवान तुम्हारे रोम रोम में है, ये रहस्य दादा भगवान ने बताया कि You are God. सब कहते हैं उसका ध्यान करो, याद करो पर सिमरन भी किसका करें? वो मैं ही हूं।

'खुद को जाना तो नज़र में ये ज़माना ना रहा।'

ये शरीर 5 तत्वों में मिल जाता है। इसका कुछ भी भरोसा नहीं है। कैसे शरीर अलोप हो जाता है, ये क्षणभंगुर है।

आत्म धन को संभालने के लिए कौन- सी संतान चाहिए, वो संतान पैदा करो। गीता भगवान ने वो संतान पैदा की, कौन ऐसी वाणी बोल सकता है, कौन अपने निश्चय में है, ये कार्य करने के लिए ऐसे pillars चाहिए। दादा भगवान से कितने बीज तैयार हो गए। अब यह कार्य आगे भी होता रहे। ध्यान, धारणा, समाधि, जिसका

ध्यान होता है वही जीवन में धारण हो जाता है, वही वचन लग जाते हैं। समत्त्व भाव, समदृष्टि, समता योग हो जाता है।

चाहे राज्ये मिले या भीख मंगाए, किसकी चिंता है? ऐसे बोलते हैं मैं वैष्णव हूं पर मास को ही प्यार करते हैं, अपने को भी वही समझते हैं। कोई शब्द बोल देगा तो रात भर उसका चिंतन करोगे, सो नहीं पाओगे अंदर में जो भी चिंतित है उसे भुला दो। भुलाना ही तुम्हारे दर्दों की अच्छी दवा है। '**अणजावल सुभाणे**' यानी जो सुबह अभी आई नहीं है उसकी चिंता करते हो?

तुम्हारे मुख में शफा है, अंदर में सब शक्तियां हैं, वो देने से बढ़ती हैं, सब देते चलो। असुर व देव दोनों के हाथ में खपच्ची बांध दी, बोला गया - भोजन करो, पहले असुरों की पंगत बैठी, उन्होंने सब भोजन गिरा दिया क्योंकि स्वयं खाना चाह रहे थे, पर देवताओं ने सोचा खुद नहीं खा सकते तो क्या हुआ, दूसरे को तो खिला सकते थे। श्रेष्ठ में श्रेष्ठ दान है ज्ञान का दान पर वो भी निष्काम भाग से हो, मैं किसी का गुरु नहीं हूं।

'नाहीं ठाकुर नाहीं दास'।

जितना देंगे, उतना बढ़ता जाता है। कुएं का पानी है, जितना निकालो उतना मीठा निकलता है।

'अनुभव का ज्ञान उज्जवलता की वाणी, यह है अकथ कहानी'।

अहमक इशारा नहीं समझता है यानी जो मूर्ख होता है वह इशारा भी नहीं समझता है। गुरु कहता है माया में जन्म नहीं गंवाओ पर गंवा देते हो, कहते हो क्या करें? शब्द नहीं लगाओ पर लगा लेते हो, लेकर बैठ जाते हो

'जिस जीव को चाह नहीं, सो शाहों का शाह'।

तुम कहने को तो कह दोगे बेगमपुर से आए हैं पर क्या गमों से ऊपर हुए हो? केवल बोलने से भी क्या होगा ?

प्रसन्नचित्त व्यक्ति को अतिशीघ्र भगवान मिल जाता है, वह बांसुरी वाला श्याम नहीं तुम अपना श्याम अपने अंदर ढूंढ लो।

'तुहिजों तो वर आहे राम'।

वह तो राधा का श्याम था, सीता का राम था, तू अपना राम ढूंढ। दूसरे से दिल नहीं लगाओ पर स्वयं को देखो।

'साथी हाथ बढ़ाना, एक अकेला थक जाएगा मिलकर बोझ उठाना।'

आलसी व्यक्ति यह कार्य नहीं कर पाएगा, वो कहेगा --- अभी तो मजे ले लो, T.V. देख लो। मैं, मेरे की दुनिया से किनारा करते जाओ। तुम तो ठहर कर बैठे हो, जब 80 साल के हो जाएंगे तब आ जाएंगे पर----

'क्यों कल पर रखते हो कल किसने देखा है'

जीवन में जो करना है वह आज ही कर लो। अभी नींद खोलकर सच में जाग।

'तेरे हाथ में है क्या तू जान जरा, तू है निर्बल, वो बलवान'

गुरु मिलने से सभी भाग्यशाली हो गए हैं, बादशाह बन गए हैं।

जन्मदिन की लख - लख बधाइयां, बधाई तो सब देते हैं पर वास्तविक बधाई तभी है जब जीवन सार्थक हो। किसी को आनंद मिल रहा हो, गुरु ने कार्य किया, अवतारों ने किया पर हमारा जीवन भी उपयोगी होना चाहिए।

क्या केवल धन के लिए जीवन गवांया? इसे सार्थक नहीं कहते। जीवन में सब कुछ हो गया, तो भी क्या?

'हीरा जन्म ना होत बारम्बार '।

यह जन्म बार-बार नहीं मिलता, 84 लाख योनि घूमते घूमते यह जीवन मिला। पर अभी इसे उपयोग में लाएं, आनंद में परिवर्तित कर दें। हमारी खुशी कोई हमसे छीन ना सके। जीवन को हर समय तराशते रहें तभी हीरा बनेगा नहीं तो पत्थर की तरह पड़े थे।

ये सोचिए - आज किसी को कोई खुशी दी, किसी को हंसाया? हमारी आंखों में दुख के आंसू नहीं आने चाहिए।

जीवन का कुछ मूल्य हो, दुनिया में सब स्वार्थ वश ही जी रहे हैं। गांव के 2-4 कंजूस बम्बई घूमने गए। ऊंची ऊंची मीनारें, Market देख रहे थे, अचानक कहीं से गुजर रहे थे-- देखा एक लड़की आत्म घात करने के लिए Building से कूदी तो सीधे कचरे के डिब्बे में गिरी और मर गई। उन्होंने देखा तो बोले - 'यहां के लोग कितने अजीब हैं, लड़की को कचरे के डिब्बे में डाल दिया, अभी 25-30 साल और जी लेती।' वो कंजूस थे तो लाभ की सोच रहे थे, आपने भी अपने जीवन को कहीं कचरे में तो नहीं डाल दिया है। इसका कुछ use होना चाहिए।

Change पसंद है तो जीवन को भी Change करें, कपड़े भी Change पसंद हैं, खाना भी Change चाहिए तो स्वंय को भी Change करो।

इतनी मोहब्बत दूसरों पर लुटाइए कि आप किसी की सीढ़ी चढ़ो तो उसके दिल की घंटियां बजने लगें।